राष्ट्रीय सहारा 22/3/16

वन संरक्षण व जलवायु परिवर्तन पर डाला प्रकाश

देहरादून (एसएनबी)। डॉल्फिन (पीजी) इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एण्ड नेचुरल साइन्सेज अन्तरराष्ट्रीय वानिकी दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर संस्थान में पौधरोपण, सेमिनार, पोस्टर प्रदर्शनी, फोटो प्रदर्शनी, वन यात्रा समेत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सोमवार को माण्डूवाला स्थित संस्थान परिसर में अन्तरराष्ट्रीय वानिकी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएफआरई के महानिदेशक डा. अशिवनी कुमार व संस्थान के चेयरमैन अरविन्द गुप्ता ने किया। बतौर मुख्य अतिथि डा. कुमार ने वानिकी से संबंधित सतत वन प्रबंधन, संरक्षण, विकास व जलवायु परिवर्तन पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को वानिकी के क्षेत्र में भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि वानिकी के जरिये विद्यार्थी देश के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। उन्होंने संस्थान के विभिन्न क्रियाकलापों की जमकर सराहना की। साथ ही उन्होंने छात्रों को गौरैया संरक्षण हेतु घोंसला भेंट किया। संस्थान के चेयरमैन श्री गुप्ता ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों एवं शिक्षकों में वनों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। संस्थान के निदेशक डा. अरुण कुमार ने कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

■ डॉल्फिन परिसर में मनाया गया वानिकी दिवस

इस मौके पर वानिकी व अन्य विभागों के छात्रों मनमोहक व शिक्षाप्रद पोस्टरों की प्रदर्शन लगाई गई जिसे लोगों ने जमकर सराहा। पोस्टर प्रदर्शनी में रीतिका, मीनाक्षी, संजना को प्रथम, अक्षय, कमल व सत्यम को द्वितीय तथा नीलम व शुभम को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। साथ ही मुख्य अतिथि समेत अन्य लोगों ने परिसर में पौध रोपण भी किया। वानिकी के विभागाध्यक्ष प्रो. एसएस विश्वास ने सभी लोगों का आभार जताया। इसके अलावा वन यात्रा का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने प्रत्यक्ष वनों में जाकर वनों को नजदीक से समझा। इस अवसर पर प्राचार्या डा. शैलजा पंत, डा. संध्या गोस्वामी, डा. श्रुति शर्मा, श्रीमती मालती साहनी, डा. ताहिर नाज़ीर, डा. अनिल कुमार उनियाल, समरेश कुमार, हेमलता भट्ट समेत अनेक लोग मौजूद थे।

राष्ट्रीय सहारा 22/3/16

वानिकी दिवस पर एफआरआई में प्रदर्शनी आयोजित

■ आमजन को मिले शोध कार्यों का लाभ, तकनीकी विकास पर जोर
■ शिक्षण संस्थानों के छात्र-छात्राओं ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

देहरादून (एसएनबी)। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में सोमवार को विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के मुख्य भवन के प्रांगण में प्रदर्शनी आयोजित की गई। संस्थान के सभी प्रभागों के साथ ही एफआरआई डीम्ड विवि के छात्र-छात्राओं व शोधार्थियों ने तकनीकी विकास, पोस्टर व छायाचित्र प्रदर्शनी में भाग लिया। प्रदर्शनी के जरिए दिखाया गया कि विभिन्न प्रकार की पादप प्रजातियों का रोपण व विकास के लिए किस प्रौद्योगिकी व वैज्ञानिक विधि का उपयोग करना जरूरी है। इससे पहले संस्थान विस्तार प्रभाग के प्रमुख डा. संदीप कुजूर ने वानिकी दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। उन्होंने शोध कार्यों की जानकारी व लाभ आमजन तक पहुंचाने व तकनीकी का सरलीकरण करने आह्वान किया।

एफआरआई में लगी वानिकी प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं छात्राएं।

संस्थान के वनस्पति प्रभाग ने बांस की प्रजातियों के विकास के लिए प्रयुक्त होने वाली गुणन प्रौद्योगिकी व रोपण विधि पर आधारित तकनीकी को प्रदर्शनी में शामिल किया। अकाष्ठ वन उपज प्रभाग ने औषधीय पादपों की बीमारियों के निदान पर आधारित तकनीकी व रसायन प्रभाग ने वन जैव मात्रा द्वारा प्राकृतिक रंग, खाद, अगरबत्ती, हर्बल गुलाल विकसित करने की तकनीकी को प्रदर्शित किया। संस्थान के वन वैज्ञानिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे शिक्षण संस्थानों के छात्र-छात्राओं, शोधार्थियों व काश्तकारों को वानिकी शोध व प्रबंधन में प्रयुक्त की जाने वाली तकनीकी व वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी। संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी, वन वैज्ञानिक व स्कूली छात्र-छात्राएं भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

Rastriya Sahara 22-03-16

विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर संस्थान के सूचना केन्द्र में प्रदर्शनी

देहरादून २१ मार्च (**दर्पण संवाददाता**)। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में आज विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर संस्थान के सूचना केन्द्र में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी में संस्थान के विभिन्न अनुसंधान प्रभागों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में पोस्टरों व मॉडलों आदि के माध्यम से संस्थान के विभिन्न प्रभागों के वानिकी शोध क्रियाकलापों को दर्शाया गया। वनस्पति प्रभाग के पादप दैहिकी शाखा द्वारा बांस की विभिन्न प्रजातियों के पौधों का बहुमात्र गुणन प्रौद्योगिकी व उसके रोपण, उपयोग आदि तकनीकी बिन्दुओं की जानकारी दर्शकों को दी गई। अकाष्ठ वन उपज प्रभाग द्वारा औषधीय पादपों के भिन्न-भिन्न बीमारियों से निदान व उनकी रोपण तकनीक आदि की वैज्ञानिक जानकारी आम जनता को दी गई।

वन संवर्धन प्रभाग की केन्द्रीय पौधशाला द्वारा सजावटी व अन्य वृक्ष प्रजातियों के पौधों व बीजों के साथ ही रसायन प्रभाग द्वारा वन जैव मात्रा द्वारा प्राकृतिक रंग, खाद, अगरबत्ती, अलोवेरा जैल, हर्बल गुलाल व अन्य विकसित प्रोद्योगिकियों के बारे में आम जनता को बताया गया। वनोपज प्रभाग द्वारा सौर ऊर्जा से लकड़ी सुखाने व बांस के परीक्षण की वैज्ञानिक विधि के बारे में भी इस विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर स्कूली बच्चों, ग्रामीण वासियों व आम दर्शकों को अवगत कराया गया। वृक्षों में लगने वाले हानिकारक कीटों व बीमारियों आदि के उपचार व निदान से भी दर्शकों को अवगत कराया गया। ..संदीप कुजूर, प्रभाग प्रमुख, विस्तार प्रभाग ने इस मौके पर प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि हमें वानिकी शोध व वानिकी से सम्बन्धित तकनीकियों में सरलीकरण करने की आवश्यकता है ताकि उसे आम जनमानस आसानी से समझ सके व साथ ही वानिकी के विस्तार व वृक्षों के रोपण आदि से आम समाज में जागरूकता उत्पन्न हो सके। इस प्रदर्शनी में केरल व अन्य शैक्षणिक संस्थानों के छात्रों ने भ्रमण किया। इस अवसर पर विशेष रूप से प्रात: नौ बजे से सायं पांच बजे तक सिटी सेन्टर के रेन्जर्स कॉलेज भवन में स्थित संस्थान के एतिहासिक छायाचित्रों, मॉडलों आदि की फोटोगैलरी व संस्थान के मुख्य भवन के सभी संग्रहालयों को आम जनता के लिए नि:शुल्क खुला रखा गया।

Doon Darpan 22-03-16

वानिकी शोध व तकनीकी के सरलीकरण पर जोर

विश्व वानिकी दिवस पर राजधानी में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

जागरण संवाददाता, देहरादून: वानिकी शोध और इससे संबंधित तकनीकी के सरलीकरण की आवश्यकता है, ताकि आम जनमानस आसानी से समझ सके। विश्व वानिकी दिवस पर वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में आयोजित कार्यक्रम में यह बात उभरकर सामने आई। इसके अलावा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के तत्वावधान में हुई कार्यशाला में औषधीय वनस्पतियों के कृषिकरण और सतत उपयोग की जरूरत पर बल दिया।

एफआरआइ में वानिकी दिवस पर पोस्टर व मॉडलों के जरिए वानिकी शोध पर रोशनी डाली गई। इस मौके पर संस्थान के विस्तार प्रभाग के प्रमुख संदीप कुजूर ने कहा कि वानिकी के विस्तार और वृक्षारोपण के मद्देनजर समाज को जागरूक करना होगा। संस्थान की ओर रेंजर्स कॉलेज स्थित भवन में भी प्रदर्शनी लगाई गई। उधर, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ.अश्विनी कुमार ने एफआरआइ में कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत में औषधीय पादप विशेषकर उच्च हिमालयी औषधीय पादपों का आयुर्वेद में विशेष महत्व है। इस क्षेत्र में आधुनिक अनुसंधान एवं विकास की कमी रही है, जो चिंता का विषय है। इस मौके पर परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ.टीपी सिंह, पूर्व सलाहकार औषध एवं सुगंध पादप डॉ.मायाराम उनियाल आदि ने भी विचार रखे।

विश्व वानिकी दिवस पर मसूरी वन प्रभाग के थत्यूड़ रेंज के अमलस में पौधरोपण करते वन कर्मचारी। जागरण

राष्ट्रीय निधि का संरक्षण सबकी नैतिक जिम्मेदारी

देवभूमि ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशन्स में आयोजित कार्यक्रम में वानिकी विभागाध्यक्ष एवं निदेशक प्रो.योगेंद्र सिंह चौहान ने वानिकी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि वन हमारी राष्ट्रीय निधि हैं और इनका संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इससे पहले कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के अध्यक्ष संजय बंसल ने किया। इस मौके पर डीन अभिषेक सरकार, उप डीन राजकुमार मिश्रा आदि मौजूद थे।

वानिकी में भविष्य संवारें छात्र

डॉल्फिन पीजी इंस्टीट्यूट आफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि आइसीएफआरई के महानिदेशक डॉ.अश्विनी कुमार ने वानिकी से संबंधित विषयों पर रोशनी डाली। साथ ही विद्यार्थियों से वानिकी के क्षेत्र में भविष्य बनाने की अपील की। कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष अरविंद गुप्ता, निदेशक डॉ.अरुण कुमार, प्राचार्य डॉ.शैलजा पंत, वानिकी विभागाध्यक्ष प्रो.एसएस विश्वास आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान परिसर में पौधा भी रोपा।

पौधरोपण अभियान का शुभारंभ

देहरादून: मसूरी वन प्रभाग की जौनपुर रेंज के अंतर्गत अलमस के जंगल में बांज के पौधे रोपकर पौधरोपण अभियान का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर अन्य-प्रजातियों के पौधे भी लगाए गए। बताया गया कि पौधरोपण अभियान बदस्तूर जारी रहेगा और इसके तहत बांज, मेहल, पदम, बुरांस, काफल के साथ ही चारा प्रजाति की घास और हिंसर, किनगोड़ आदि का रोपण भी किया जाएगा। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान उपेंद्र सिंह पुंडीर, सरपंच मालचंद सिंह पुंडीर, हुकम सिंह, नरेंद्र जोशी, कुलदीप नेगी, ईशम सिंह, शांति प्रसाद गोड़, बचनदास, अमित पैन्यूरा आदि मौजूद थे।

Dainik Jagran 22-03-16

The Pioneer 22/3/16

Two-day workshop on high altitude medicinal plants at FRI

PNS ■ DEHRADUN

The use of medicinal plants has been documented since ancient times in the Indian civilization though at present appropriate and sustainable techniques need to be standardized to conserve the species of medicinal plants. The Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) director general Ashwani Kumar said this at the inaugural session of a two-day workshop on high altitude medicinal plants at the Forest Research Institute (FRI) here on Monday.

Speaking on the occasion, the ICFRE DG said that there is great potential in India for medicinal plants, especially the medicinal herbs found in the high altitude areas. Modern research and development efforts has been inadequate in so far as high altitude medicinal plants are concerned, said Kumar.

He said, "The use of medicinal plants has ancient roots in Indian civilization's history and culture and has also been documented in old sculptures and literature. Presently, appropriate and sustainable harvesting techniques need to be standardised in order to conserve the species of medicinal plants," stressed the council DG.

Later, in the first technical session, NS Chauhan from the university of Horticulture and Forestry, Solan (Himachal Pradesh) spoke on the diversity, utilisation and availability of high altitude medicinal plants in Himachal Pradesh.

Former advisor to Uttarakhand medicinal and aromatic plants board, MR Uniyal presented a brief overview of the utilisation of high altitude medicinal plants by the pharmaceutical industry in India. He stressed on the importance of correct identification of high altitude medicinal plants. From the Himalayan Forest Research Institute at Shimla in Himachal Pradesh, Dr Vaneet Jishtu addressed the gathering regarding the red-listed medicinal plants and their conservation status.

According to the council officials, the two day workshop on high altitude medicinal plants is aimed at providing a forum for facilitating interaction among policy makers, State forest departments, research organisations, non governmental organisations, law enforcing agencies, high altitude medicinal plant growers, traders and various stakeholders.

By facilitating better understanding of the technicalities of the medicinal plant sector, the workshop is focused on achieving further improvement in efforts towards harnessing the considerable scope presented by the high altitude medicinal plant wealth.

The ICFRE ADG Dr TP Singh, DDG (research) Dr Vimal Kothiyal, scientist Shilpa Gautam and VRS Rawat among others also addressed the gathering in the inaugural session.

The additional principal chief conservator of forests, Government of Himachal Pradesh, Arvind Alipuria, ICFRE DDG (Administration) AS Rawat and scientists were also among those who attended the inaugural session of the workshop sponsored by the National Medicinal Plants Board (NMPB) of the Department of Ayurveda, Yoga and Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH) of the Ministry of Health and Family Welfare.

Exhibition held at FRI to mark World Forestry Day

PNS ■ DEHRADUN

An exhibition of various aspects of forestry was held at the Forest Research Institute here to mark the occasion of World Forestry Day on Monday. Various divisions of the institute set up posters and models to display their forestry research activities.

The various varieties of bamboo, plantation, utilisation and varied technical aspects were presented by exhibits. The displays also included information on medicinal plants and their use in treatment of various ailments, saplings and seeds of various ornamental and other tree species and the technologies developed for making natural colours, manure, incense sticks, herbal gulal, technique for drying wood using solar power and scientific method for testing bamboo among other aspects.

Visitors going through posters and models displayed in exhibition held on World Forestry Day on Monday
Pioneer photo

The Pioneer 22-03-16

Harvesting techniques of high altitude medicinal plants be standardized: Dr Kumar

DEHRADUN, MAR 21 (HTNS)

In India, there is great potential of medicinal plants, especially high altitude medicinal plants. Modern research and development efforts have been very inadequate in so far as high altitude medicinal plants are concerned, said Dr Ashwani Kumar, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE).

Speaking at the inaugural session of the two day workshop on 'High Altitude Medicinal Plants,' Dr Ashwani Kumar said that in Indian history and culture use of medicinal plants has been as old as history and civilization and has been documented in old scriptures and literature.

Dr Kumar further said that in order to conserve the species of medicinal plants, appropriate sustainable and harvesting techniques need to be standardized.

Dr N S Chauhan, from University of Horticulture and Forestry, Nauni, Solan (HP) spoke on diversity utilization and availability of high altitude medicinal plants in Himachal Pradesh.

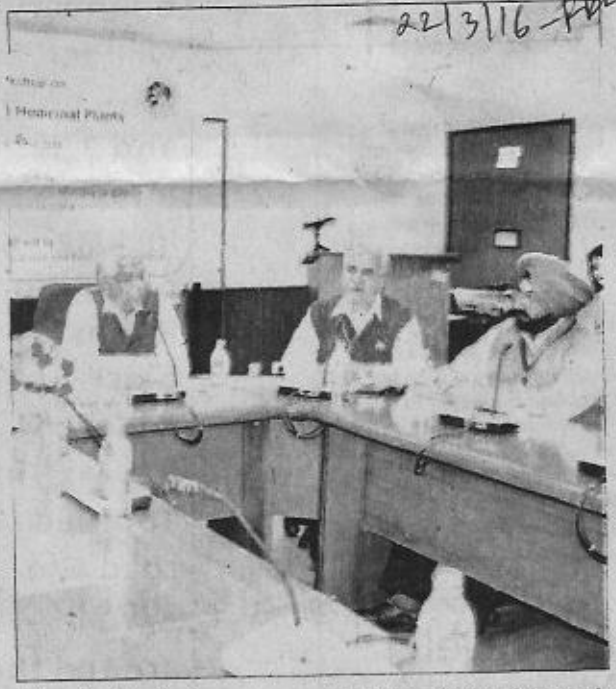

Dr M R Uniyal, former Advisor, Medicinal and Aromatic Plants, Uttarakhand gave a brief overview of utilization of high altitude medicinal plants by pharmaceutical industry in India. He stressed on correct identification of high altitude medicinal plants.

Dr Vaneet Jishtu from Himalayan Forest Research Institute, Shimla apprised about Red Listed medicinal plants and their conservation status. Dr G S Rawat, Dean Wildlife Institute of India chaired the session.

ICFRE is organizing a two day workshop on High Altitude Medicinal Plants on Mar 21 and 22. The workshop will provide a forum to the policy makers, state forest departments, research organizations, non-governmental organizations, law enforcing agencies, high altitude medicinal plant growers, traders to interact among various stakeholders and to understand the intricacies of this sector, and to further improve the enormous potential high altitude medicinal plant produce. The workshop is sponsored by National Medicinal Plants, Ministry of AYUSH, Govt of India.

During the inaugural session, Dr T P Singh ADG, ICFRE welcomed the participants and apprised about the workshop. Dr Vimal Kothiyal, DDG, ICFRE also addressed the participants. Dr. Shilpa Gautam, Scientist, ICFRE conducted the inaugural session and VRS Rawat proposed the vote of thanks.

Dr Arvind Alipuria, Additional PCCF Govt of Himachal Pradesh; AS Rawat, DDG (Admin) ICFRE; Dr Rajiv Pandey and Dr RS Rawat Scientists from ICFRE were also present during inaugural session.

The Hindustan Times 22-03-16

The Tribune 22/3/16 - FRI

Call to preserve medicinal plants at high-altitude areas

TRIBUNE NEWS SERVICE

DEHRADUN, MARCH 21

Participants in the high-altitude medicinal plants workshop at the Forest Research Institute in Dehradun on Monday. TRIBUNE PHOTO

The Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) organised a two-day workshop on high-altitude medicinal plants at the Forest Research Institute (FRI) today. The workshop is sponsored by the National Medicinal Plants, Ministry of AYUSH.

The workshop will provide a forum to policy makers, state forest departments research organisations, non-governmental organisations, law enforcing agencies, high-altitude medicinal plant growers, traders to interact among various stakeholders and understand the intricacies of this sector and improve the enormous potential of high-altitude medicinal plant.

Addressing the gathering at the inaugural session of the workshop, Dr Ashwani Kumar, Director General, ICFRE, said high-altitude medicinal plants had a great potential, but no attempts were made to conserve and develop them.

Dr Ashwani said the use of medicinal plants had been as old as our history and civilisation. He said in order to conserve species of medicinal plants, appropriate sustainable and harvesting techniques needed to be standardised.

Dr NS Chauhan from the University of Horticulture and Forestry, Nauni, Solan, spoke on the utilisation and availability of high-altitude medicinal plants in the state.

Dr MR Uniyal, former adviser, Medicinal and Aromatic plants, Uttarakhand, gave a brief overview of utilisation of high-altitude medicinal plants by pharmaceutical industry in India.

He stressed on correct identification of medicinal plants. Dr Vaneet Jishtu from the Himalayan Forest Research Institute, Shimla, apprised the gathering of red-listed medicinal plants and their conservation status. The session was chaired by Dr GS Rawat, Dean, Wildlife Institute of India.

Dr TP Singh ADG, ICFRE, welcomed the participants. Dr Vimal Kothiyal, DDG, ICFRE, addressed the participants on the occasion.

Dr Shilpa Gautam, scientist, ICFRE, conducted the inaugural session and VRS Rawat proposed the vote of thanks.

The Tribune 22-03-16